भारतीय चित्रकला (भाग- 5)

drishtiias.com/hindi/printpdf/indian-art-part-5

दक्कनी क्षेत्रों में चित्रकारी

- दक्कन में चित्रकला के प्रारंभिक केन्द्र अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा में थे।
- प्रारंभ में यहाँ चित्रकला का विकास मुगल शैली से स्वतंत्र रूप में हुआ, किंतु बाद में 17वीं-18वीं सदी में इस पर मुगल शैली का अधिकाधिक प्रभाव पड़ा।

अहमदनगर

- अहमदनगर चित्रकला के प्रारंभिक उदाहरण में 'तारीफ़-ए-हुसैनशाही' का नाम लिया जाता है जो इंडो-इस्लामिक चित्रकारी का सुंदर उदाहरण है।
- अन्य उदाहरणों में 'हिंडोला राग', निजाम शाह द्वितीय (1591&96) के प्रतिरूप तथा 1605 ई. का मलिक अंबर का चित्र महत्त्वपूर्ण है जो राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में है।

बीजापुर

- बीजापुर में अली आदिल शाह (1558&80 ई.) और इब्राहिम द्वितीय (1580&1627) ने चित्रकला को संरक्षण प्रदान किया।
- 'नजूम-अल-उलूम' (विज्ञान के सितारे) नामक विश्वकोश को अली आदिल शाह प्रथम के शासनकाल में सचित्र किया गया।
- इब्राहिम द्वितीय एक संगीतकार थे और इसी विषय पर 'नवरसनामा' नामक एक पुस्तक भी लिखी, उनके कुछ प्रतिरूप अनेक संग्रहालयों में मौजूद हैं।

गोलकुंडा

- मोहम्मद कुली कुतुब शाह (1580&1611) के समय चित्रांकित पाँच आकर्षक चित्रकलाओं का एक समूह गोलकुंडा के लघु चित्रों में विशिष्ट है।
- गोलकुंडा चित्रकला के अन्य उत्कृष्ट उदाहरण हैं- 'मैना पक्षी के साथ महिला' (1605), सूफी कवि की सचित्र 'पांडुलिपि' और दो प्रतिकृतियाँ (मो.अली की)।

तंजावुर

- 18वीं सदी के अंत में सुदृढ़ आरेखन, छायाकरण की तकनीकों में अभिवृद्धि तथा चटकीले वर्णों का प्रयोग जैसी चित्रकला की विशेषताओं ने तंजावुर चित्रकला में उन्नति की।
- सचित्र काष्ठ फलक, जिस पर राम के राज्याभिषेक को दर्शाया गया है, तंजावुर चित्रकला की सजावटी और आलंकारिक शैली का उदाहरण है।
- यहाँ लघु चित्रकला में जो शंकुरूप मुकुट दिखाई देता है, वह तंजौर चित्रकला की प्रतीकात्मक विशेषता है।